अगर जींद की धरती को अपना राजनैतिक दुर्भाग्य सौभाग्य में बदलना है तो!

कहते हैं कि जो धरती, जो कौम या जो मानव प्रजाति अपने इतिहास को भुला देती है, या उसको भुलाये जाने हेतु किये जाने वाले षड्यंत्रों और षड्यंत्र करने वाले दोनों के प्रति मूक रहती है, अथवा उसके ऐतिहासिक परन्तु महान पुरुषों से हुई गलतियों को क्षमा नहीं करना जानती, उस धरती, कौम अथवा प्रजाति के साथ ठीक वैसा ही होता है जैसा कि जिला जींद हरियाणा के साथ इसकी राजनैतिक बिसातों पर जब से जन्म लिया है तब से तो प्रत्यक्ष देख रहा हूँ, उससे पहले भी शायद काफी जमाने से ऐसे ही चलता आ रहा है|

कहने को हर कोई जींद को हरियाणा की राजनीती का केंद्रबिंदु कहता है, हर आशावान उभरते हुए से ले स्थापित बड़े नेता ने हरियाणा की राजनीती में जब भी बड़ी उड़ान भरने को पंख फैलाये, जींद ने उसको फर्श से अर्श तक दिखाए| चौधरी देवीलाल से लेकर चौधरी बंसीलाल, चौधरी ओमप्रकाश चौटाला से ले विगत में बीजेपी द्वारा पठाये गए चौधरी वीरेंदर सिंह, चौधरी भूपेंद्र सिंह हूडा के पैदल मार्च का शुरुआत स्थल हो या उनकी शंखनादी रैलियां, हर किसी ने जींद की धरती से हुंकार भरी और समय-समय पर वह हुंकार सीधी चंडीगढ़ अथवा दिल्ली तक गूंजी| जींद की धरती ने वो भी वक्त देखे जब वीरेंद्र सिंह 1991 में मुख्यमंत्री बनते-बनते रह गए, जींद की धरती ने मुख्यमंत्री भी दिए तो एक जमाने में तीन-तीन कैबिनेट मंत्री भी यहीं के बने| लेकिन नहीं बदले तो जींद के हालात|

तो आखिर ऐसा क्या मनहूस साया है इस जींद की धरती पर कि बनाने के नाम पर तो ख़ाक को भी लाख बना देती है, परन्तु जब खुद बनने की बात आती है तो किसी लाचार अबला सी कुँधलाती नजर आती है?

क्या यह जींद की रियासत के राजा सरदार रघुवीर सिंह संधू का इसको छोड़ संगरूर में राजधानी बना लेने का अभिशाप है; कि तू रानी तो रहेगी परन्तु राजों को चलाने वाली नहीं सिर्फ बनाने वाली रहेगी? या उस दादावीर चौधरी भूरा सिंह दलाल जी महाराज व् दादावीर चौधरी निंघाहिया सिंह दलाल जी महाराज की किसी भी अन्य महिमामंडित वीर से अतिवीर शहादतों को भुला देने का अभिशाप ढो रही है जिसके कि ओ जींद की जनता और धरती तूने तेरे गलियारों में कोई बुत भी नहीं लगवाए; ना उनके किस्से गवाए, लिखवाये और पढ़वाए? या उस दादीराणी भागीरथी देवी जी महाराणी की चंगेज खान की सेना को चालीस किलोमीटर तक दौड़ा-दौड़ा के मारने वाली तेरी अपनी धरती की विलक्षण वीरांगना को प्रणाम ना करने की सजा तुझे मिल रही है जिसने 1355 में चंगेज खान की चंगेजी ढीली कर दी थी? या फिर उस भगत मनफूल जाट जुलानी वाले की अमर-बलिदानी को भुलाने की सजा है, जिसको आज हमारी चेतनशून्यता ने सिर्फ एक गाँव तक सिमित करके रख दिया है?

आखिर जींद की जनता इतनी कुम्भकर्णी नींद क्यों सो रही है अपने इतिहास को लेकर? कह रहे हैं कि जींद के राजा ने अंग्रेजों का साथ दिया इसलिए यह अभिशाप है, क्या वाकई? क्या जींद के राजा ने इतना बड़ा

साथ दिया था जितना बड़ा जयपुर-आमेर वालों ने दिया? उन्होंने सिर्फ अंग्रेजों का साथ ही नहीं अपितु मुग़लों तक को तो अपनी राजकुमारी तक दी, परन्तु वो तो आज भी यूं के यूं चमक मार रहे हैं| उनके महल-किले आज भी जनता के केंद्र का आकर्षण बने खड़े हैं|

जबकि जींद, जींद के दोनों किले तो अब गए जमाने की बात हो ही चुके हैं, साथ ही वो रानी-तालाब जिसको कि खुद जींद के राजा ने बनवाया और आज जींद की आइकोनिक पहचान कहलाता है, उस के किसी भी मुहाने पर एक पत्थर तक इस बात का नहीं लगा हुआ जो आगंतुकों, पर्यटकों और खुद जींद की नई पीढ़ियों को यह तक बता सके कि इस कृति को बनवाया किसने था? देश की किसी भी ऐतिहासिक साइट पर चले जाओ, वहाँ असल तो देश के आर्कियोलॉजिकल डिपार्टमेंट की तरफ से सूचनापट्ट पर उस साइट का ऐतिहासिक ब्यौरा लिखा मिलता है अथवा स्थानीय जनता खुद ऐसे बोर्ड लगवा देती है| बस एक पूरे देश में निराले हैं तो हम जींद वाले, जो वैश्विक स्तर की कृति हमारे शहर में होते हुए भी उस पर ऐसा सूचनापट्ट लगवाने तक की कृतज्ञता अपने पुरखों के प्रति नहीं दिखाते|

गोहाना रोड से रानीतालाब की तरफ चलते हुए जब यह रोड रानी तालाब पर ख़त्म होता है और शिवचौक आता है तो वहाँ रानी तालाब पर छोटा सा पार्क है, क्या उस पार्क में जींद की जनता को जींद की तमाम ऐसी ऐतिहासिक हस्तियों जिनके कि कुछ उदाहरण मैंने ऊपर दिए, उनकी मूर्तियां नहीं लगवानी चाहियें? या ज्यादा जगह चाहिए तो बराबर में गुरूद्वारे और रानी तालाब के बीच खाली पड़ी "बुल्ला जोहड़ी" है, क्या उसको जींद के ऐतिहासिक प्रेरणा-स्थल के रूप बदल वहाँ "जींद प्रेरणा स्थल" जैसा कुछ नहीं बनाना चाहिए?

सही कह रहा हूँ और आत्मा की सुन के कह रहा हूँ, और बाहर का कोई नहीं भी सुनता हो तो जींद का हर जागरूक युवा-पुरुष-स्त्री सुने, अगर हमें अपनी धरती से इस राजनैतिक अभिशाप को ख़त्म करना है तो हमें ऐसा राजनैतिक व् ऐतिहासिक प्रेरणा पार्क जींद में बनाना ही होगा|

मैं इस बारे अपील करते हुए, राजनैतिक सिमताओं से बाहर आते हुए मेरे उन तमाम मित्रों को भी आह्वान करूँगा, जो कांग्रेस, इनेलो, हजकां पार्टियों से या आज बीजेपी की सरकार का हिस्सा हैं और ऐसे कार्यों में रोचकता दिखाते आये हैं, वो लें इस सौभाग्यशाली काम को अपने हाथ में और करें इस अभियान का आगाज| वस्तुत: यह कर्म आपको प्रदेश के सिर्फ राज बनाने वाले नहीं अपितु राजा भी बना सकता है|

Author: Phool Malik

Publisher: Nidana Heights

Date: 10/12/2014